डॉ. अंबेडकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण और संगोष्ठी समारोह में माननीय स्पीकर महोदय का सम्बोधन

कोटा के मेरे प्यारे वासियों, माता-बहनों, बड़े-बुजुर्गों को प्रणाम। सभी साथियों और आप स्नेही जनों को नमस्कार करता हूँ। आज डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती पर यहाँ आने का अवसर मिला, बाबासाहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण और इस संगोष्ठी में भाग लेने का अवसर मिला, यह मेरे लिए अति सुखद है। आप अपनों के बीच यहाँ होना मेरा सौभाग्य है।

मैं बाबा साहब डॉ. भीमरावजी अंबेडकर को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।

बाबा साहब का सारा जीवन पिछड़े, गरीब, वंचित और शोषित जन के कल्याण में समर्पित रहा। उनका जन्म एक ऐसे समय पर हुआ था जब छुआछूत और भेदभाव की मानसिकता भारतीय समाज पर हावी थी। ऐसे समय पर **साल 1891** में आज ही के दिन महाराष्ट्र के एक गाँव में भीमराव अंबेडकर जी का जन्म हुआ था। पानी पीने से लेकर स्कूल जाने, और पढ़ने-लिखने में बाबा साहब ने संघर्ष किया, मगर वो अपने निश्चय पर डटे रहे। विदेश जाकर पढ़ाई की और **डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की**। अपनी मेहनत और काबिलियत के बल पर बाबा साहब दुनिया के **महान अर्थशास्त्रियों** में शामिल हुए, उन्होंने **कानून की पढ़ाई** की और उसमें भी पारंगत हुए। मित्रों, उस महान संघर्ष का ही परिणाम है कि आज दुनिया बाबा साहब अंबेडकर को **भारतीय संविधान के शिल्पकार** के रूप में जानती है।

भारत के संविधान के निर्माण में बाबा साहब की प्रमुख भूमिका रही और तब शायद वे हमारी संविधान सभा में **सबसे अधिक शिक्षित और काबिल व्यक्ति** थे। हमारे संविधान का ड्राफ्ट तैयार करने से पहले बाबा साहब ने दुनियाभर के कई संविधानों का अध्ययन किया था। उन्होंने दुनियाभर के कानून पढ़ें और तब जाकर एक महान, विस्तृत, सर्वश्रेष्ठ विधायी दस्तावेज भारत के संविधान का प्रारूप तैयार किया।उन्होंने हमें स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बंधुत्व के आदर्शों पर आधारित महान ग्रंथ संविधान दिया, जिसकी आज हम पूरी श्रद्धा के साथ पालना करते हैं, पूरी निष्ठा के साथ अपने संविधान का अनुकरण करते हैं।

राष्ट्र को सभी पंथ और दलीय विचारधारा से ऊपर रखने का अनमोल संदेश बाबासाहब ने देशवासियों को दिया था। उन्होंने मानव धर्म को सबसे बड़ा धर्म माना और कहा कि **मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाता है।** बराबरी और बंधुत्व आधारित ये जो अनमोल-आदर्श सिद्धांत बाबा साहब ने दुनिया को दिया था, मैं समझता हूँ कि शायद ही कोई दूसरा सिद्धांत इससे बढ़कर देखने में आया हो।

उन्होंने कहा था कि **सामाजिक लोकतंत्र के बिना राजनीतिक लोकतंत्र अधूरा है।**उनको मालूम था कि वंचित जनों की राजनीतिक भागीदारी तभी संभव है, जब समाज में उनकी दशा सुधारी जाए। बिना सामाजिक उत्थान के राजनीतिक तौर पर सशक्त होना संभव नहीं था। इसलिए उन्होंने सामाजिक बराबरी पर विशेष ध्यान दिया और इसे हासिल करने के लिए शिक्षा को प्रमुख हथियार बनाया। **महात्मा गाँधी का सत्याग्रह जहाँ देश की राजनीतिक मुक्ति के लिए था, वहीं बाबा साहब ने सामाजिक न्याय के लिए सत्याग्रह किया।**

मगर ये सवाल आज भी हमारे सामने है कि जिस सामाजिक न्याय की लड़ाई बाबा साहब ने लड़ी थी क्या हमने वह सामाजिक न्याय प्राप्त कर लिया है?

मैं समझता हूँ कि इसका जवाब हाँ या ना में नहीं दिया जा सकता है। ये सच्चाई है कि आज़ादी के इन 75 वर्षों में सामाजिक न्याय की ओर हमने एक लंबा रास्ता तय किया है। एक समय था जब वंचित जन के अधिकार और उत्थान केन्द्रीय विषय था, मगर आज प्रमुख विषय यह नहीं है। अपनी मेहनत, समर्पण और समझ के बल पर समाज के शोषित और वंचित वर्गों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। अपने अधिकार प्राप्त कर मंज़िलें निर्धारित की हैं। आज तो विषय है उन मंजिलों तक जल्दी पहुँचने का। तेज रफ्तार से आगे बढ़ने का। मैं अक्सर युवाओं से मिलता रहता हूँ। कॉलेज, यूनिवर्सिटी में, और कई कार्यक्रमों में जब नौजवानों से मिलता हूँ तो आगे बढ़ने के लिए, इनोवेशन के लिए उत्साह उनमें देखता हूँ। स्टैन्ड अप इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया जैसी महत्वाकांक्षी योजनाका लाभ पाकर समाज का युवा वर्ग आगे बढ़ रहा है। युवा नवाचार कर रहे हैं, नए स्टार्ट अप खड़े कर रहे हैं। हमारे युवा रोजगार प्राप्त कर उत्पादनतो कर ही रहे हैं लेकिन इसके साथ ही नौकरियां भी दे रहे हैं।लाखों की संख्या में युवा आंत्रप्रिन्योर बनकर नए नए क्षेत्रों में रोजगार पैदा कर रहे हैं और अपने योगदान से देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रहे हैं।

बाबा साहब ने समाज को नारा दिया था कि **शिक्षित बनो और संगठित रहो**। आज हम देखते हैं कि युवा बाबा साहब के कथन को जीवन में उतार रहे हैं। वंचित समाज के युवा विज्ञान, कला, कौशल, साहित्य और हर क्षेत्र में उन्नति कर रहे हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बाबा साहब से प्रेरणा पाकर कोई बच्चा वकालत के क्षेत्र में जा रहा है तो कोई इकोनोमिस्ट बन रहा है तो कोई संविधान और राजनीति समझ रहा है। आदिवासी समाज के जन भी अपनी कला, अपने कल्चर से देश और विदेशों में अपना प्रभाव छोड़ रहे हैं। लोक कला, लोक गायन, लोक नृत्य और लोक संगीत में युवा साथी भागीदारी कर रहे हैं। इन युवाओं में स्वावलंबी बनाने के साथ ही कुछ अलग करने का जुनून देखा जा सकता है।

हर एक व्यक्ति के अधिकारों की बात कर, सबके लिए न्याय और स्वतंत्रता की बात कर बाबा साहबने हमारे लोकतंत्र को वास्तव में साकार किया। लोकतंत्र का अर्थ होता है कि लोगों की इच्छा पर व्यवस्था चले। शासन के निर्णय, नीति-नियम का निर्माण सामान्य सहमति से हो। यहाँ जब हम लोगों की इच्छा की बात करते हैं, उनकी सामान्य सहमति की बात करते हैं, तब इसमें हर वर्ग, हर व्यक्ति की भागीदारी होना ज़रूरी है।
हम अगर सोचे कि किसी एक वर्ग, किसी जाति को इससे बाहर कर दें, किसी एक समूह या कुछ व्यक्तियों की सुनी ही ना जाए, उन्हें बोलने का अधिकार भी ना दिया जाए; तब हम उसे लोकतंत्र नहीं कह सकते। बिना सबकी भागीदारी के वह **सबके लिए लोकतंत्र** नहीं हो सकता। बाबा साहब अंबेडकर ने देश के ऐसे करोड़ों लोगों को स्वर दिया, जो उत्पीड़न और शोषण के चलते मूक रह गए थे।

उन्होंने करोड़ों लोगों को राजनीतिक और सामाजिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ा। हर एक नागरिक को मताधिकार मिला, शिक्षा और रोजगार प्राप्त करने में सबको समान अवसर मिले,और आखिर तब जाकर हमारे लोकतंत्र की वास्तविकता सिद्ध हुई। **आप अमेरिका को देख लीजिए**, वहाँ महिलाओं और अश्वेत लोगों को वोट करके अपनी सरकार चुनने का अधिकार शुरुआत में नहीं दिया गया था। जब हम कहते हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा, सबसे महान लोकतंत्र **भारत का लोकतंत्र** है, तो वो हम यूँ ही नहीं कहते हैं। हमने अपने प्रत्येक वयस्क नागरिक को, बिना जाति, धर्म, लिंग, नस्ल के भेदभाव के उन्हें **वोटिंग राइट** दिया। और ये अधिकार हमने संसदीय लोकतंत्र की शासन व्यवस्था को चुनने के साथ ही सभी नागरिकों को दे दिए थे।

इस तरह बाबा साहब के सपनों पर हर एक नागरिक को समान अधिकार मिले, जिससे भारतीय लोकतंत्र अपने सुंदर स्वरूप में साकार हुआ।

संत कबीर और महात्मा फुले से प्रेरणा पाकर बाबा साहब ने समतामूलक श्रेष्ठ समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कियाथा।आज जो सामाजिक बराबरी हम अपने समाज के अंदर देखते हैं, जब हम वंचित जन को अधिकारों से सम्पन्न देखते हैं, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह महान अंबेडकर जी के प्रयासों का ही परिणाम है।

जाति, रंग, नस्ल जैसे मानवीय भेदभाव को मिटाने के लिए बाबा साहब ने आजीवन संघर्ष किया। बाबा साहब के उस मिशन पर आज हमने बहुत प्रगति कर ली है। लेकिन साथ ही पूरी ज़िम्मेदारी के साथ मैं यह भी कहना चाहूँगा कि समतामूलक समाज निर्माण की मंजिल से अभी भी हम दूर हैं।

बहुत क़दम हमने तय कर लिए हैं और बहुत सीढ़ियाँ चढ़नी अभी बाकी हैं।

मित्रों, बाबा साहब अंबेडकर जी बहुत महान शख्सियत रहे हैं। अगर हम सोचते हैं किआज इस सभा में आकर, आज उनकी प्रतिमा पर फूल-माला चढ़ाकर, आज उन्हें फ़ेसबुक, व्हाट्सएप्प पर उनकी जयंती मनाकर हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं, तो मैं कहूँगा किहम गलत सोचते हैं। **बाबा साहब के लिए सच्ची श्रद्धांजलि** होगी कि भेदभाव रहित जिस समाज का सपना उन्होंने देखा था, हम वैसा समाज बनाए। जो विचार बाबा साहब ने दुनिया को दिए थे, हम उन्हें आत्मसात करें। हम उन रास्तों पर चलें, जो बाबा साहब ने शोषणमुक्त व्यवस्था के निर्माण के लिए प्रशस्त किए थे।

आज उनकी जयंती पर आइए संकल्प लें कि हम अपने संविधान के उच्च आदर्शों का पालन करते हुए तथा अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपणे राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देंगे। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएंगे।

इतना कहकर मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। आप सभी को एक बार फिर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जी की जयंती पर बहुत बहुत बधाई। कार्यक्रम के आयोजक गणों और उपस्थित सभी जनों को बहुत बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद, जय हिन्द।